

04.25

उत्तर पक्ष आयुषी-वत् /

पुनः आदिता उपदिष्टा होकर आविर्भूत-
 दिवा-रात्रि किं सर्व-शब्दा-को-विशेष-
 सुखा-हो-रात्रि-हो, शब्दा-वत्-रात्रि-हो /
 अथ-को-विशेष-नहीं-हो, रात्रि-को-
 समाप्त-करने-का-अनुशेष-किन्वा-रात्रि-हो /
 आदिभाव /

26.04

आदिता

पुनः-रात्रि-का-संवादा-आदिता-मात्र-पुनः-
 आदि-शब्द-चात्र-के-आदिता-के-आदिता-
 एवं-अनुशेष-पदाधिकारी-वत्-के-पदा-
 11.26/01/01 दिनांक 27.9.22 के आदिता-में-
 किन्वा-रात्रि-हो /

संबंधित-पक्षों-को-नो-विशेष-निर्णय-
 अनुशेष-की-रात्रि /

पुनः-पक्ष-द्वारा-भूत-आदिता-में-उत्तर-
 किन्वा-रात्रि-हो कि-सर्व-शब्दा-को-विशेष-
 कर-किन्वा-रात्रि-हो, अथ-सुखा-करने-का-
 अनुशेष-किन्वा-रात्रि-हो /

अथ-द्वारा-भी-पुनः-अधिकारी-अ-
 समीप-एवं-सम्बन्ध-उप-निर्णय-के-आदि

स्वयं निरीक्षण किया गया। उपरि
शामिल मद्रा में रोज़ बनाये 42-
सहस्रों के समकाल की गरी।

आवेदन-सूच-लिखित में आवेदन-
दिया गया है कि सर्व-राजा-भित्तमरा
मुक्त हो गया है, रोज़ बन गया है
मक-कोई विवाद नहीं है, वाद-को
समाप्त करने का अनुरोध किया गया।

अथवा भूमि-सूच-भी-पतिवैदित-
किया गया है कि मद्रा के पुरचान
रोज बना दिया गया है उस रोज में
भित्तमरा नहीं है।

अथवा तथ्या-से-मह-प्राप्त-
है कि सर्व-राजा-में रोज बन गया है
उस रोज में भित्तमरा नहीं है।

अतः वाद की कार्यवाही समाप्त
की जाती है।


26.04.25
अथवा-भविष्य
कुंदा।